

संदर्भ सं. AIRTU/GS/33

दिनांक: 13.02.2022

प्रति,

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और CEO

नई दिल्ली

आदरणीय महोदय,

विषय: भारतीय रेलवे के सभी जोनों, मंडलों और डिवीज़नों के सभी ट्रैक मेंटेनरों के लिए **“रक्षक उपकरण”** प्रदान करने के बारे में।

संदर्भ: 1) पत्र संख्या 563/1/141/TRACK/2018-19, दिनांक: 10.01.2018

2) RBE No. 2017/Transt.cell/Civi1/03, दिनांक: 05.02.2018

उपरोक्त विषय के संबंध में 1.5 लाख कि.मी. भारतीय रेल ट्रैक कई वर्षों से ट्रैक मेंटेनर्स की देखरेख में है। वे ट्रैक की सुरक्षा के लिए चौबीसों घंटे तथा हररोज मेहनत करते हैं। ऐसे में हर साल 300 से 400 ट्रैक मेंटेनर्स अपना काम करते हुए ट्रैक पर मर रहे हैं। ये भारतीय ट्रैक मेंटेनर्स की स्थिति है जिन्हें भारतीय रेल की रीढ़ कहा जाता है। जिस तरह से अपने देश के लिए किसान महत्वपूर्ण हैं उसी तरह हम ट्रैक मेंटेनर भी भारतीय रेल के लिए हैं।

यह निंदनीय बात है कि हमारा रेल प्रशासन और अधिकारी कोई सुविधा नहीं दे रहे हैं। Ref. No.02 RBE -05/02/2018, R.B(CRB) द्वारा गठित समिति ने जिनकी सिफारिश की थी, परन्तु वर्दी और टूल किट कहीं भी पूरी तरह से उपलब्ध नहीं कराये गये हैं। इस आर्डर के 5.0] गठित समिति ने जिस की सिफारिश की है, वह रक्षक उपकरण हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण उपकरण है; वह हर दिन ट्रैक मेंटेनर्स के रन ओवर को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमें ट्रेनों के आने से पहले सिग्नल और हॉर्न की आवाज देता है, जिससे हम सतर्क हो सकते हैं और अपनी जान बचा सकते हैं।

भारतीय रेल में ट्रेनों की गति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है और विद्युतीकरण भी हो रहा है। इसलिए हमारा संगठन आपसे अनुरोध करता है कि कृपया सभी ट्रैक मेंटेनर्स को रक्षक उपकरण प्रदान करें।

सन्दर्भ संख्या 1 के अनुसार SCR जोन सिकंदराबाद डिवीजन के मुख्य ट्रैक इंजीनियर ने RB को एक रिपोर्ट भेजा है कि उन्हें रक्षक उपकरण का उपयोग करने के अपने प्रयोग में सफलता मिली है।

हमारा AIRTU संगठन आपसे दिल से अनुरोध करता है कि कृपया भारतीय रेल सभी जोनों, मंडलों और सेक्शनों के ट्रैक मेंटेनर्स को रक्षक उपकरण प्रदान करें। इस तरह से हम ट्रैक मेंटेनर्स रन-ओवर की दर को कम कर सकते हैं जो हर दिन होता है, इसलिए कृपया हमारे ट्रैक मेंटेनर्स के जीवन को बचाने में हमारी मदद करें।

धन्यवाद

प्रति,

- 1) रेल मंत्रालय, नई दिल्ली।
- 2) इंफ्रास्ट्रक्चर RB के सदस्य
- 3) प्रधान कार्यकारी निदेशक (IR) रेलवे बोर्ड
- 4) आयुक्त, रेलवे सुरक्षा, लखनऊ
- 5) IR के राज्य मंत्री , नई दिल्ली
- 6) AIRTU के संबद्ध संघों के अखिल भारतीय GS

आपका आभारी

कान्ताराजू ए.वी

अखिल भारतीय राष्ट्रीय जनरल

सचिव- AIRTU

अनुलग्नक XIV

दक्षिण मध्य रेलवे

मुख्यालय कार्यालय

कार्य शाखा

सिकंदराबाद

संख्या 563/1/141/ट्रैक/2018-19

दिनांक: 10.01.2018

ईडी/सीई (पी)

रेलवे बोर्ड , नई दिल्ली

विषय: 'रक्षक' पर विशेष रिपोर्ट - के संबंध में।

आपके अवलोकन के संदर्भ के लिए 'रक्षक' पर एक विशेष रिपोर्ट संलग्न है।

(अक्षय कुमार झा)

मुख्य ट्रैक इंजीनियर

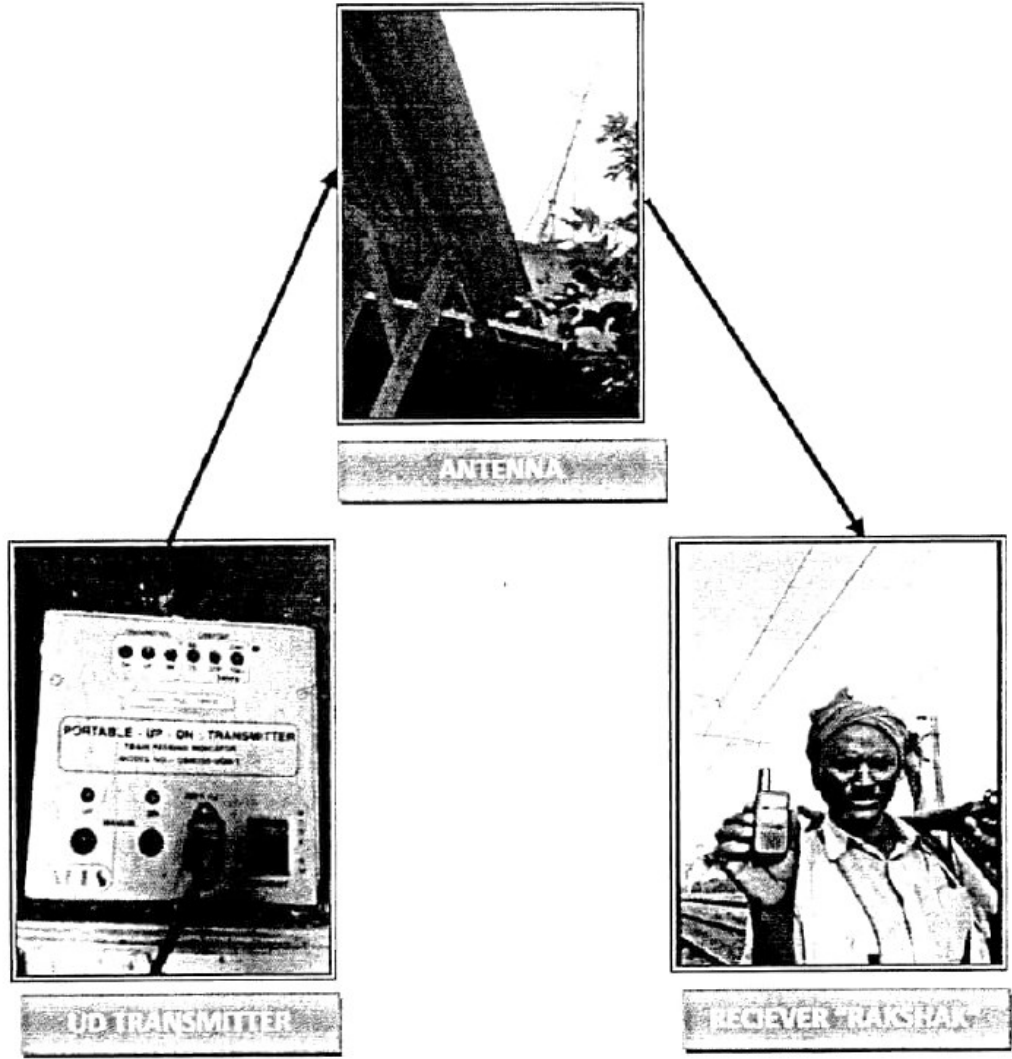
सी/- ईडी/ट्रांसफॉर्मेशन (सिविल)/रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली

रक्षक पर विशेष रिपोर्ट

दक्षिण मध्य रेलवे
सिकंदराबाद



रक्षक प्रणाली



क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.0	कार्यकारी सारांश	3-4
2.0	दक्षिण मध्य रेलवे के सिकंदराबाद मंडल में रक्षक परीक्षण और कार्यान्वयन पर विशेष रिपोर्ट।	5-8
3.0	एक विशिष्ट ब्लॉक अनुभाग और गूगल मानचित्र में सिग्नल ट्रांसमिशन और रिसेप्शन का योजनाबद्ध आरेख	9-10
4.0	रक्षक प्रावधान की अनुमानित लागत	11
5.0	कार्य-निष्पादन रिपोर्ट	9 पृष्ठ अनुलग्नक

1.0 रक्षक पर कार्यकारी सारांश

1.1 परिचय

रक्षक आने वाली ट्रेनों के संबंध में रेलवे ट्रैक के साथ काम करने वाले रेलवे कर्मचारियों के लिए एक वायरलेस सुरक्षा चेतावनी प्रणाली है। इस उद्देश्य के लिए, आने वाली ट्रेनों को इंगित करने के लिए कोडित डिजिटल सिग्नल प्रेषित किया जाता है। “लाइन-ऑफ-साइट” स्थितियों के तहत रिसीवर द्वारा सिग्नल की शक्ति का पता लगाने और डिकोड करने के लिए सिग्नल को पर्याप्त मजबूत होना चाहिए। मैसर्स एसीईएस एंटरप्राइजेज, मुंबई ने उपरोक्त सिस्टम को विकसित किया है।

1.2 परीक्षण और प्रणाली की स्थापना:

सिकंदराबाद मंडल के सिकंदराबाद - काजीपेट सेक्शन पर पिंडियल (पीओएल) - नस्कल (एनएसकेएल), नस्कल (एनएसकेएल) - घनपुर (जीएनपी) और घनपुर (जीएनपी) - इप्पुगुडा (आईपीजी) (24 किमी की दूरी) के बीच परीक्षण 10-12-2010 से 18-06-2011 तक आयोजित किया गया था। तत्पश्चात अगस्त, 2012 में एकल निविदा के आधार पर मैसर्स एसीईएस एंटरप्राइजेज, मुंबई को एक महीने की स्थापना अवधि और 12 महीने की रखरखाव अवधि के साथ कार्य प्रदान किया गया, जो 22-09-2013 को समाप्त हो गई थी।

1.3 उपकरणों और कार्यप्रणाली का संक्षिप्त विवरण:

1.3.1 उपकरण विवरण

प्रणाली में दो भाग होते हैं।

- i) पोर्टेबल अप / डाउन ट्रांसमीटर
- ii) डिजिटल सिग्नल रिसीवर

ट्रांसमीटर यूनिट को सामान्य रूप से स्टेशन पर रखा जाता है और इस यूनिट के लिए एंटीना मुक्त हवा में पर्याप्त ऊंचाई पर लगाया जाता है और

उपयुक्त आरएफ केबल के माध्यम से ट्रांसमीटर से जुड़ा होता है। ट्रांसमीटर यूनिट में शामिल हैं - डिजिटल सिग्नल मॉड्यूलैटर

-12V/7AH आंतरिक निर्मित बैटरी

-केबल के साथ एंटीना

- बैटरी चार्जर निर्मित

उपरोक्त उत्पाद को 'यूडी ट्रांसमीटर' कहा जाता है

1.3.2 कार्यपद्धति : ट्रांसमीटर को रिले ऑपरेशन से लास्ट स्टॉप सिग्नल (एलएसएस) को बंद करने के संबंध में एक फीड मिलती है लेकिन केबल के माध्यम से फीड प्राप्त करने के अलावा रिले रूम के संचालन में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है। डिजिटल सिग्नल रिसीवर यूनिट रेलवे ट्रैक के साथ काम करने वाले गैंगमैन / पेट्रोलमैन / ट्रैकमैन के पास उपलब्ध है। यह उपकरण “अप / डाउन ट्रांसमीटर” द्वारा प्रेषित ट्रिगर के अनुसार सिग्नल (अप/डाउन) प्राप्त करता है और निर्दिष्ट अंतराल, सुनाई देने वाला बजर और कंपन (केवल शुरुआत में) पर विजुअल डिस्प्ले (एलईडी “अप” - और/या “डाउन”) प्रदान करता है। जिस क्षण अंतिम स्टॉप सिग्नल बंद हो जाता है। जब ट्रेन एलएसएस सिग्नल से टकराती है तो एलईडी दृश्य प्रदर्शन बंद हो जाता है। उस अवधि के दौरान जब रिसीवर (रक्षक) को ट्रांसमीटर से बिना ढके पैच में कोई सिग्नल प्राप्त नहीं होता है, तो उपकरण एलईडी डिस्प्ले के बिना दो बीप / बजर देता है और हर 60 सेकंड (लगभग) के बाद कंपन होता है।

1.3.3 आवृत्ति: यह प्रणाली 160.450 मेगाहर्ट्ज वाहक पर काम करती है जो रेलवे को आवंटित बैंडविड्थ (150-170 मेगाहर्ट्ज) के भीतर है।

1.4 निष्पादन:

सिकंदराबाद काजीपेट सेक्शन पर पिंडियाल - नस्कल - घनपुर - इप्पुगुडा सेक्शन के बीच 24 किमी (अप और डाउन दोनों लाइन) के बीच गश्ती दल /

ट्रैकमैन के लिए “रक्षक” सुरक्षा प्रणाली अप और डाउन दोनों आने वाली ट्रेन के बारे में श्रव्य बजर और कंपन के साथ एलईडी संकेत के माध्यम से अग्रिम जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुत उपयोगी साबित हुई है। ।

रक्षक उपकरण ने गश्ती दल के लिए अतिरिक्त सुरक्षा बढ़ा दी है। **रक्षक उपकरण की शुरुआत के बाद ट्रैक पर काम कर रहे कीमैन और गैंगमैन के रन ओवर के मामलों की एक भी घटना नहीं हुई, और रिले कक्ष में इस कनेक्शन के कारण काम कर रहे रिले के साथ हस्तक्षेप किया गया। सभी रक्षक उपकरणों का प्रदर्शन बहुत संतोषजनक पाया गया है और परिणाम उत्साहजनक पाया गया है।**

1.5 रक्षक (आलेर (एएलईआर) -पेम्बर्टी (पीबीपी) - जन्गाँव (जेडएन) -यसंतापुर (वाईएसपीएम) -वांगपल्ली (डब्ल्यूपी) के स्वीकृत कार्य:

सिकंदराबाद-काजीपेट सेक्शन के उपर्युक्त सेक्शन में एसएसई/पी.वे/एएलईआर के तहत रक्षक उपकरणों (या 48 किमी (252/0-300/0) का काम स्वीकृत है और निविदा को अंतिम रूप दिया गया है। वर्तमान में सीनियर डीएसटीई/टेली/सिकंदराबाद द्वारा प्रक्रिया वायरलेस कब्जा प्रमाण पत्र (डब्ल्यूपीसी) के तहत है, जो जल्द ही अपेक्षित है जिसके बाद एजेंसी काम करेगी।

1.6 इप्पागुडा-पिंडियाल स्टेशन पर 300/0 से 324/0 तक स्थापित रक्षक उपकरण की वर्तमान स्थिति:

सिस्टम एएमसी द्वारा कवर नहीं किया गया था और रखरखाव के समस्याओं के कारण यह खराब हो गया था। हालाँकि अब संपत्ति को ओईएम मेसर्स एसीईएस एंटरप्राइजेज द्वारा एएमसी के तहत लाया गया है। उद्यम और रखरखाव हाल ही में फर्म मेसर्स एसीईएस एंटरप्राइजेज द्वारा लिया गया है। और सिस्टम ठीक से काम कर रहा है

1.7 अनुमानित लागत: लगभग 4 से 5 वर्षों के जीवन चक्र को ध्यान में रखते हुए रक्षक उपकरण की अनुमानित लागत डब्ल्यूपीसी लाइसेंस शुल्क की वार्षिक लागत सहित लगभग 50,000 रुपये प्रति किमी/प्रति वर्ष है।

1.8 सिफारिश:

ट्रैकमेन/पेट्रोलमैन/अन्य अधिकारियों को आने वाली ट्रेन के संबंध में अग्रिम सूचना प्राप्त करने के लिए रक्षक उपकरण बहुत उपयोगी है। हालांकि, उपकरणों के पूरे जीवन चक्र के लिए निरंतर आधार पर सिस्टम को बनाए रखने के लिए ओईएम के साथ एएमसी कॉन्ट्रैक्ट करने की आवश्यकता है।

(विस्तृत रिपोर्ट के लिए AIFAP के साथ संपर्क करें)

भारत सरकार

रेल मंत्रालय

रेलवे बोर्ड

सं. 2017/ट्रांसफ.सेल/सिविल/03

नई दिल्ली, दिनांक: 05- 02- 2018

महाप्रबंधक, आल इंडियन रेलवे /उत्पादन इकाइयां, एनएफ (कोन), कोर

डीजी/आरडीएसओ और नायर,

सीएओ, डीएमडब्ल्यू/पटियाला, डब्ल्यूपीओ/पटना,

सीओएफएमओडब्ल्यू/एनडीएलएस, आरडब्ल्यूपी/बेला

विषय: ट्रैकमेन/कीमेन/पेट्रोलमैन के लिए वर्दी और टूल किट की समीक्षा करने के लिए समिति की रिपोर्ट

संदर्भ: बोर्ड का पत्र संख्या 2018/ट्रांसफ.सेल/03 दिनांक 8 जनवरी, 2018

भारतीय रेल में ट्रेनों के सुरक्षित संचालन को सुनिश्चित करने में ट्रैक मेंटेनर्स के महत्व और उनके सामने आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते

हुए, बोर्ड (CRB) ने SCR (संयोजक), CR और NR के GMs की एक समिति गठित की थी, जो बेहतर वर्दी और टूल किट के उन उपायों की सिफारिश करने के लिए थी जो उनकी कामकाजी परिस्थितियों में सुधार करेंगे।

सभी अनुलग्नकों के साथ समिति की रिपोर्ट इसके साथ संलग्न है और इसे रेलवे बोर्ड की वेबसाइट (<http://www.indianrailways.gov.in/railwayboard>) के परिवर्तन कक्ष अनुभाग में अपलोड किया गया है। समिति की सिफारिशों के आधार पर, बोर्ड (एमई, एमएस, एफसी और सीआरबी) ने अनुपालन के लिए निम्नलिखित को मंजूरी दी है।

1.0 पोशाक भत्ता:

1.1 आरबीई संख्या 141/2017 दिनांक 03.10.2017 के अनुसार ट्रैक मेंटेनरों के लिए ड्रेस भत्ते का पालन किया जाना जारी रहेगा। ट्रैक महिलाओं के लिए, ड्रेस भत्ता में कुर्ता (गर्मी और सर्दी दोनों), सलवार, जर्सी, हेलमेट के अलावा अन्य हेडगियर, तौलियां , मोजे और पानी की बोतलें शामिल होंगी। ट्रैक महिलाओं के लिए ड्रेस की रंग योजना वही होगी जो ट्रैकमेन के लिए होती है।

2.0 वर्दी और सुरक्षात्मक गियर्स:

चूंकि ट्रैक मेंटेनरों को गर्म मौसम में गश्त करते समय गर्मी के दौरान बहुत अधिक तापमान से लेकर ठंड के मौसम में गश्त के लिए रात में बहुत कम तापमान में अत्यधिक कठिन जलवायु परिस्थितियों में गिट्टी पर चलना पड़ता है, इसलिए उन्हें विशेष गियर प्रदान करना आवश्यक है जो उन्हें अति मौसम की स्थिति से बचाएं। इसके अलावा ट्रैक मेंटेनर्स के काम में रेल और स्लीपर जैसी भारी वस्तुओं के साथ काम करना शामिल है, जो काम करते समय उनके पैरों पर गिर सकते हैं। पैरों को पर्याप्त रूप से संरक्षित करने की आवश्यकता है। उनकी काम करने की स्थिति जमीनी या निर्माण परियोजनाओं के समान होती है। इसलिए उन्हें निम्नलिखित विशेष सुरक्षात्मक गियर प्रदान किए जाने हैं:

3.0 किट और उपकरण:

3.1 मौजूदा बोर्ड के निर्देशों के अनुसार ट्रैक मेंटेनरों काम करने के लिए स्पैनर हैमर, क्रो बार, मोटार पैन आदि जैसे को हल्के वजन के उपकरण प्रदान करें।

3.2 रात में गश्त के लिए प्रतिनियुक्त मेट, कीमेन और सभी ट्रैक मेंटेनरों को एच.एस. लैंप के स्थान पर एनआर/एससीआर द्वारा विकसित तिरंगा एलईडी 3-सेल टॉर्च/रिचार्जबल टॉर्च प्रदान करें। रात्रि गश्त के लिए प्रतिनियुक्त रेलपथ अनुरक्षकों को ड्राई सेल की खरीद के भुगतान के संबंध में, बोर्ड (एमई एवं एफसी) द्वारा रेलवे बोर्ड के पत्र संख्या 2016/सीई-1/जीएनएस/4 दिनांक 07.12 2017 के तहत रात्रि गश्त के लिए प्रतिनियुक्त सभी रेलपथ अनुरक्षकों को प्रति माह @ 150 रुपये का भुगतान करने के लिए पहले ही विलेख किया जा चुका है। उसका पालन किया जा सकता है।

3.3 गश्ती दल के लिए बेहतर स्टाफ, जैसा कि एससीआर पर इस्तेमाल किया जा रहा है, पारंपरिक कर्मचारियों के स्थान पर उपलब्ध कराया जा सकता है।

3.4 मध्य रेलवे के पुणे डिवीजन और उत्तर रेलवे के फिरोजपुर डिवीजन द्वारा विकसित विभिन्न उपकरणों को रखने के प्रावधान के साथ मजबूत कम वजन वाले बैग टूल किट बैग को उपयुक्त माना गया है। इस तरह के टूल किट बैग पी-वे-कारीगरों और उनके सहायकों सहित सभी ट्रैक अनुरक्षकों को प्रदान किए जा सकते हैं।

4.0 खरीद का तरीका

आज की तारीख में स्टोर विभाग चमकदार जैकेट खरीद रहा है; यह व्यवस्था जारी रह सकती है। उपरोक्त तालिका 1 (पैरा 2.1) में उल्लिखित अन्य मदों को मंडल स्तर पर वरिष्ठ डेन/डेन प्रभारी, सीनियर डीएफएम/डीएफएम, सीनियर डीएमएम/डीएमएम की स्पाॅट खरीद समिति के माध्यम से खरीदा जा सकता है।

एक बार जब सिस्टम स्थिर हो जाता है, और वेंडर विकसित हो जाते हैं, तो इन्हें डिवीजन के स्टोर डिपार्टमेंट के माध्यम से खरीदा जा सकता है।

5.0 रक्षक

सिकंदराबाद-काजीपेठ खंड पर 24 किलोमीटर की दूरी पर एससीआर द्वारा गश्ती दल/ट्रैकमेन के लिए “रक्षक” सुरक्षा प्रणाली को अपनाया गया है और श्रव्य बजर और कंपन के साथ एलईडी संकेत के माध्यम से आने वाली ट्रेनों के बारे में अग्रिम जानकारी प्राप्त करने में उपयोगी पाया गया है। ट्रैकमैन के अपने कर्तव्य के निर्वहन के दौरान बड़ी संख्या में होने वाले रन-ओवर मामलों को ध्यान में रखते हुए, एक रक्षक प्रकार की सुरक्षा प्रणाली स्थापित करना आवश्यक है और इसे शीघ्रता से लागू करने की आवश्यकता है। हालाँकि, चूंकि यह प्रणाली अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है, इसलिए पूरे रेल नेटवर्क पर तैनाती अभी संभव नहीं हो सकती है। हालाँकि, बड़ी संख्या में रन ओवर-केस को ध्यान में रखते हुए, क्रैश के आधार पर पूरे उच्च घनत्व नेटवर्क पर रक्षक प्रकार की सुरक्षा प्रणालियों की तैनाती का विस्तार करने का निर्णय लिया गया है, यह एक सुरक्षा आइटम होने के कारण आरआरएसके के तहत बुक किया जा सकता है।

6.0 गैंग टूल कम रेस्ट रूम

प्रत्येक सेक्शन गैंग के गैंग बीट में अधिमानतः स्टेशन पर या लेवल क्रॉसिंग पर एक टूल कम रेस्ट रूम उपलब्ध कराया जाना चाहिए। कमरे में आराम की सुविधा, अपना छोटे सामान रखने के लिए निजी लॉकर हो सकते हैं। टूलबॉक्स को भी उसी भवन में समायोजित किया जा सकता है। इस प्रकार का आवास जहां तक संभव हो स्टेशन भवन के पास या गैंग बीट में पड़ने वाले लेवल क्रॉसिंग पर उपलब्ध कराया जा सकता है। इन कमरों में बिजली की नियमित आपूर्ति के अलावा सौर प्रकाश के वैकल्पिक स्रोत भी उपलब्ध कराए जा सकते हैं। पानी के लिए हैंडपंप/पाइप द्वारा जलापूर्ति की जा सकती है। कुछ रेलवे (एसईआर और डब्ल्यूसीआर के केजीपी डिवीजन) में पहले से ही उपयोग में

आने वाली आधुनिक प्रीफैब्रिकेटेड निर्माण विधियों का उपयोग जल्दी और गुणवत्तापूर्ण निर्माण के लिए किया जा सकता है। इनका निर्माण चरणबद्ध तरीके से ट्रैक नवीकरण कार्यों/आरआरएसके से निधियों के माध्यम से किया जाना चाहिए। डीआरएम द्वारा स्थानीय स्तर पर प्राथमिकता दी जा सकती है। यह परिवर्तन प्रकोष्ठ रेलवे बोर्ड के सहयोगी वित्त की सहमति से जारी किया जा रहा है।

कृपया प्राप्ति की पावती दें और अनुपालन सुनिश्चित करें

(टी के पांडे)

कार्यकारी निदेशक, परिवर्तन

1. पीएफए, आल इंडियन रेलवे और उत्पादन इकाइयां
2. एडीएआई (रेलवे), नई दिल्ली
3. निदेशक लेखापरीक्षा, सभी भारतीय रेलें

(संजीव कुमार)

कार्यकारी निदेशक (लेखा), परिवर्तन

को प्रति,

4. निदेशक, भारतीय रेलवे सिविल इंजीनियरिंग संस्थान, पुणे।
5. निदेशक, इंडियन रेलवे इंस्टीट्यूट ऑफ मैकेनिकल एंड इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, जमालपुर।
6. निदेशक, भारतीय रेलवे सिग्नल इंजीनियरिंग और दूरसंचार संस्थान, सिकंदराबाद।
7. निदेशक, इंडियन रेलवे इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, नासिक।

8. कार्यकारी निदेशक, इंडियन रेलवे सेंटर फॉर एडवांस्ड मेंटेनेंस टेक्नोलॉजी ,ग्वालियर।
9. निदेशक, भारतीय रेलवे परिवहन प्रबंधन संस्थान, लखनऊ।
10. रजिस्ट्रार, रेलवे दावा अधिकरण, दिल्ली।
11. महासचिव, आईआरसीए, नई दिल्ली।